Vol 3 Issue 3 sept 2013

Impact Factor : 1.2018 (GISI)

ISSN No :2231-5063

# Monthly Multidisciplinary Research Journal

# *GoldenResearch Thoughts*

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

**IMPACT FACTOR : 0.2105**

**Welcome to ISRJ**

**RNI MAHMUL/2011/38595** **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

## *International Advisory Board*

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [ Malaysia ]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [ PK ]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

## *Editorial Board*

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India**
**Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net**

Golden Research Thoughts
Volume-3, Issue-3, Sept-2013
ISSN 2231-5063

Available online at www.aygrt.isrj.net

# भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका

**पिंकी पाटिल**
लैक्चरार, राजनीतिक शास्त्र विभाग, हिन्दु गर्ल्ज कालेज, जगाधरी (यमुनानगर) हरियाणा।

***सारांश :***भारतीय समाज में नारी सदैव दुर्बल एव अबला रही हैं जिस समाज में स्त्री को पुरूषों के समान दर्जा मिला है वहां विकास, सम्पन्नता, सहजता व सकारात्मकता का वातावरण रहा है। उसे शास्त्रों में जो अधिकार मिलने चाहिये थे वे नहीं दिए गए, परन्तु महिलाएं उन अधिकारों के लिए स्वयं संघर्षशील है। आज जब हम वर्ष 2020 तक विकसित राष्ट्र बनने का सपना देख रहे है तथा विकास के दौर में सबसे आगें बढ़ने का हौसला बना रहे। ऐसे में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता चारों और महसूस की जा रही है महिलाओं के उत्थान के लिए शिक्षा सबसे आवश्यक है। शिक्षा के द्वारा महिलाएं राजनीतिक कूटनीति व्यापार, उद्योग, कला, प्रशासन आदि हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। लेकिन ऐसी महिलाओं का प्रतिशत भाग बहुत ही कम है। महिलाओं की राजनीति भागीदारी बढ़ाने के लिए पुरूष समाज की मानसिकता में बदलाव आवश्यक है इसके लिए युवा वर्ग को प्रयास करने चाहिए और साथ ही महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति स्वयं भी सचेत रहना होगा।

***प्रस्तवाना :***

वर्तमान युग परतन्त्रों व पीड़ितों के उत्थान का युग है जिसमें समाज के सभी क्षेत्रों में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिये है। 21वीं सदी का प्रथम दशक भारतीय राजनीति में महिला वर्ग के उत्थान, चिन्तन एवं विकास का दशक कहा जा सकता है।

समाज के अनेको सबंधों का केन्द्र होने के कारण भारतीय महिलाएं और विशेशतः पीढ़ी की महिलाओं में जो अस्थिरता उत्पन्न हुई है, उससे अतीत से चली आ रही अनेक मान्यताओं को खण्डित कर दिया है, किन्तु उससे अनेक समस्याएं भी उत्पन्न हुई है।

भारतीय सविंधान में महिला एवं पुरूष हेतु अपवादविहीन स्तर पर समानता, स्वतन्त्रता एवं अवसर उपलब्धि के अनेक प्रावधान है यद्यपि महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन उस गति से नहीं हुआ, जो आपेक्षित है, तथापि महिलाओं ने धीरे–धीरे अपनी भूमिका को सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक शैक्षणिक एवं प्रशासकीय क्षेत्रों में सफलापूर्वक निभाने के प्रमाण दिये हैं। यह प्रक्रिया पुरूष एकाधिकार को चुनौती नहीं, अपितु महिला–पुरूष सामाजीकरण एवं भागीदारी की अनिवार्यता का प्रमाण है।[1]

भारत में पुरूष व महिलाओं का अनुपात लगभग बराबर हैं इस कारण महिलाओं को सामाजिक प्रगति का का एक मजबूत आधार समझा जाना स्वाभाविक है। आज हम भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति पर विचार करने पर पाते है कि महिलाओं के क्रियाकलापों ने पहले की अपेक्षा प्रगति हो रही है जो उन्हें समाज में मिलनी चाहिए। राष्ट्रीय विकास में महिलाओं का सक्रिय योगदान रहा है, लेकिन यह योगदान नारी जाति की जनसंख्या के अनुपात में कम है।

राजनीतिक दृष्टि से महिला वर्ग की स्थिति भारत के इतिहास या सदी के प्रारम्भ से ही निश्चित ही अन्य देशों की तुलना में समानता की रही है। विश्व के अनेक देशों में महिलाओं को अपने महत्वपूर्व राजनीतिक अधिकार मतदान के लिए संघर्ष करना पड़ा। इंगलैण्ड, फ्रांस और अमेरिका जैसे देशों की महिलाओं को इस अधिकार के लिए प्रतिज्ञा करनी पड़ी और आज भी अनेक देशों की महिलाएं इस अधिकार के लिए संघर्ष कर रही हैं। परन्तु भारत में स्वतन्त्रता के पश्चात् शिक्षित ही नहीं, अशिक्षित महिलाओं को भी, भारत के गणराज्य बनने के साथ ही अधिकार स्वाभाविक व सहज रूप से पुरूषों के साथ ही मताधिकार प्राप्त हो गया, इतना ही नहीं, स्वतन्त्रा प्राप्ति के उपरान्त राज्यसभा और लोकसभा विधान परिषदों एवं विधानसभाओं आदि में महिलाओं ने प्रवेश लिया। प्रथम महिला अध्यक्ष के रूप में श्रीमति विजयलक्ष्मी पण्डित, प्रथम मुख्यमंत्री सुचेता कृपालानी, प्रथम राज्यपाल सरोजनी नायडू, प्रथम महिला राष्ट्रापति के रूप में श्रीमति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल का कार्य भी गरिमामय रहा है और आज श्रीमति मीरा कुमार लोकसभा अध्यक्ष व अनेक राज्यों में महिला मुख्यमंत्री कार्यरत है।

राजनीतिक जागरूकता अर्थात राजनीतिक चर्चा करना, राजनीतिक चेतना होना, राजनीतिक दलों की जानकारी होना, राजनीतिक पद्वति का एक आवश्यक तत्व है। विश्व का सबसे बड़ा प्रजातन्त्र या लोकतन्त्र भारत को माना जाता है। यदि प्रजातन्त्र का अभिप्राय जनता का शासन है तो सवाल उठता है कि राजनीतिक निर्णयों ने भागीदारी कौन करता है, यह मतदान तय करते है। भारत में महिला मतदाता की संख्या लगभग आधी है परन्तु महिला मतदाता की जागरूकता चुनाव के समय पता लगती है यहां उनकी स्थिति शौचनीय है। उन्हें प्रायः राजनीतिक मोहरों के रूप में ही प्रायोग किया जाता है।[2]

वर्तमान भारतीय राजनीति में महिलाओं की अपेक्षित संख्या देखने को नहीं मिलती। सामान्यतः भारतीय समाज ने महिलाओं का कार्यक्षेत्र मात्र घर तक ही सीमित मानते हुए राजनीति को पुरूष का क्षेत्र माना जाता है। यह समझा जाता है कि राजनीति महिला, प्रकृति के विपरीत है, महिला राजनीतिक क्षेत्र की उपेक्षित क्षमताओं एवं गुणों से वाचिंत है केवल कुछ राजनीतिक दल ही चुनावों में महिला प्रत्याशी को अवसर देते है। चूकि महिला समाज की अनेक सीमाओं के भीतर ही चुनाव प्रचार एवं राजनीतिक कार्य करती है। उसे कमजोर एवं अक्षम समझा जाता है। अतः उनकी सफलता के विषय में सशंय बना रहता है। ऐसी स्थिति में महिला व्यवस्थापिका तथा अन्य प्रतिनिधि संस्थाओं में अपने हितों एवं समाजिक दायित्व की रक्षा नहीं कर पाती। अतः व्यवथापिका में महिलाओं हेतु स्थान सुरक्षित कर कुछ सीमा तक अधिकारों के असन्तुलन को कम किया जा सकता है।

स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत में समय–समय पर सम्पन्न हुए लोक सभा में पन्द्रह आम चुनावों के परिणाम आंकड़े लोकसभा में महिलाओं की भागीदारी की स्पष्ट तस्वीर पेश करते है।[3]

***लोकसभा में महिलाओं की स्थिति***

| लोकसभा | वर्ष | चुनाव लड़ने वाली महिला सदस्य | चुनाव में विजयी होने वाली महिला सदस्य | सफलता की दर प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|
| पहली | 1952 | – | – | – |
| दूसरी | 1957 | 45 | 22 | 48.9 |
| तीसरी | 1962 | 66 | 31 | 47.0 |
| चौथी | 1967 | 67 | 29 | 43.3 |
| पांचवी | 1971 | 86 | 21 | 24.4 |
| छंठी | 1977 | 70 | 19 | 27.1 |
| सातंवी | 1980 | 143 | 28 | 19.6 |
| आठंवी | 1984 | 162 | 42 | 25.9 |
| नौंवी | 1989 | 198 | 29 | 14.7 |
| दसंवी | 1991 | 326 | 37 | 11.4 |
| ग्यारहवीं | 1996 | 509 | 40 | 6.7 |
| बाहंरवी | 1998 | 274 | 43 | 15.7 |
| तेहरवी | 1999 | 284 | 49 | 17.7 |
| चौदहंवी | 2004 | 355 | 45 | 12.7 |
| पन्द्रहवी | 2009 | 556 | 58 | 10.6 |

*पिंकी पाटिल ,"भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका"*
Golden Research Thoughts Vol-3, Issue-3 (Sept 2013): Online & Print

भारत में वर्ष 1957 से 2009 तक सम्पन्न हुए लोकसभा के चौदह आम चुनावों में कुल 3231 महिला उम्मीदवारों ने चुनाव लड़ा, जिसमें से 493 महिलाएं चुनाव जीतने में सफल रही। यहां 1957 में चुनाव लड़ने वाली महिलाओं की संख्या सिर्फ 45 थी, जो 2009 में सम्पन्न 15वीं लोकसभा के आम चुनाव में बढ़कर 556 हो गई। इसी प्रकार जहां वर्ष 1957 के लोकसभा चुनाव में 22 महिलाएं चुनाव जीतकर लोकसभा में पहुंची थी, वहीं 15वीं लोकसभा (2009) के निर्वाचन में 58 महिलाएं विजय हासिल कर राजनीति में भागीदारी निभा रही है। लोकसभा चुनाव लड़ने और विजयी होने वाली महिला प्रत्याशियों की सफलता पर जहां वर्श 1957 में 8.9 थी जो 2009 के चुनाव में 10.6 प्रतिशत रही।

1957 से लेकर 2009 तक के चुनावों पर दृश्टिपात किया जए तो स्पश्ट होता है कि संसद में महिलाओं की भागीदारी बहुत कम है। यह भी एक विचारणीय पहलू है कि क्या महिलाएं स्वयमं आगे नहीं आ रही है अथवा देश का पुरूश प्रधान उसे आगे नहीं आने देना चाहता।

दूसरा महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि भारतीय राजनीति में नीति–निर्माण की प्रक्रिया में महिलाओं की भारीदारी किस प्रकार सुनिश्चित कि जाए। इस तथ्य को ध्यान में रख कर 73 वें सविधान संशोधन के माध्यम में ग्राम–पंचायतों एवं शहरी निकायों में महिलाओं का 33 प्रतिशत प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित किया गया 1996 में महिलाओं के लिए राश्ट्रीय नीति बनाई गई, लेकिन राष्ट्रीय नीति–निर्माण के 18 वर्षों के पश्चात् तथा पंचायती राज विधेयक पारित होने के बाद भी राष्ट्रीय स्तर पर महिला भागीदारी की सुनिश्चितता न होना अपने आप में आश्चर्यजनक है।[4]

राष्ट्रीय नीति–निर्माण में महिलाओं की सहभागिता के अभाव में हम जनसंख्या विस्फोट, दहेज हत्या राजनीतिक अपराधीकरण जैसी जटिल समस्याओं का निराकरण नहीं कर पाते हैं। महिलाएं प्रकृति–प्रदत्त अपने गुणों के कारण अधिक व्यावहारिक होती है। वे राजनीति को मर्यादित बनाये रखने में अधिक सक्षम एवं सार्थक होती है, किन्तु जब इस तथ्य को पूर्ण करने के लिए 81वां सविंधान संशोधन विधेयक संसद में आया, तो इसमें पुरूश–पूर्वाग्रह एवं प्रतिबद्धता की स्पश्ट झलक दिखाई दी।

"राजनीति में महिलाओं की कम भागीदारी" एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है। सयुक्त राष्ट्र इस प्रसंग में 1987 से ही सजग एवं सक्रिय है 1980 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा कोपेनहेगन में जो विश्व महिला सम्मेलन आयोजित किया गया, उसमें भी इस बात पर बल दिया गया था कि कानूनी तौर पर महिलाओं हेतु समान अधिकार एवं अवसर की व्यवस्था कर देने मात्र से महिलाओं की स्थिति में सुधार या राजनीति में उनकी भागीदारी नहीं बढ़ जाएगी। राजनीति एवं आर्थिक क्षेत्र की निर्णय लेने वाली संस्थाओं में महिलाओं को प्रभावकारी प्रतिनिधित्व प्राप्त हो सके, इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ और उनके संगठनों को राष्ट्रीय सरकारों के साथ सहयोग करते हुए उचित रणनीति विकसित करनी होगी।[5]

भारतीय महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता के लिए वे अपने स्वयं के प्रयासों से अपने को राजनीतिक गतिविधियों के प्रति जागरूक बनाऐ और निचले स्तर ग्राम पंचायत एवं नगर पंचायत के स्तर पर आरक्षण के द्वारा प्राप्त पद पर अपनी वास्तविक सक्रिय दावेदारी प्रस्तुत करें, यदि वे सक्रिय भूमिका निभाने का प्रयास करेगी तो राजनीतिक कार्यों में स्वतः अपने अनुभवों से धीरे–धीरे प्रशिक्षित हो जाएगी। जब एक महिला अपने घर के सभी प्रकार अर्थात सामाजिक बन्धनों, पारिवारिक रिश्तों एवं घर के आर्थिक प्रबन्धों, स्वास्थ्य, पोशण, ग्रह बचत, शिक्षा सफाई आदि के प्रबन्धों को अकेले बिना किसी सहयोग के निभा सकती है तो राजनीतिक क्षेत्र में क्यों नहीं, क्योंकि राजनीतिक क्षेत्र में उसे इन्हीं कार्यों को अर्थात प्रबन्धों को बड़े स्तर पर करना है, और इन्हीं सब कार्यों को करने के लिए प्रशासनिक संगठन भी उसके सहयोग के लिए होगा और किये गए सर्वेक्षिण के अनुभव बताते है कि जहां कहीं महिलाओं ने प्राप्त राजनीतिक पदों पर अपनी भूमिका निभाई है, वे अपनी सामान्य क्षमता के बल पर अपनी साकारात्मक भूमिका के प्रति प्रंशसनीय रही है।। ऐसे अनुभवों से अन्य महिलाओं को भी राजनीतिक क्षेत्र में अपने तथा प्राप्त राजनीतिक पदों पर अपनी वास्तविक भूमिका निभाने का सक्रिय प्रयास करना चाहिए।

इस नई सह शताब्दी में महिलाओं और समाज के विचारों में एक उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिलता हैं। युवा पीढ़ी के कई लोग यह मानते है यह मानते है कि महिलाओं के संबंध में काफी लड़ाईया जाती जा चुकी है। परन्तु ऐसा कहना सही नहीं है। अभी बहुत कुछ जीतना बाकी है।

अतः भारतीय महिलाओं के समक्ष चुनौतियों की संख्या कम नहीं है। हर कदम पर उन्हें चुनौती स्वीकार करके ही अपने को राजनीतिक क्षेत्र में जागरूक तथा विकसित करना होगा। महिलाओं को अपने अन्दर सुस्त पड़ी शक्ति को पुनः विकास एवं प्रगति की दिशा में जाग्रत करके समाज को भी उसी दिशा में ले जाना होगा, क्योंकि वही राष्ट्र निर्माण में पुरूश के समान आस्तित्व ही नहीं उससे अधिक उत्तरदायित्व रखती है।[6]

महिलाओं का राष्ट्र के विकास में समुचित योगदान हो सके इसके लिए आवश्यक है कि महिलाओं के मार्ग में आने वाली समस्त बाधाओं को दूर करके उन्हें राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय भाग लेने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया जाए। वास्तव में महिलाओं की पर्याप्त भागीदारी एवं सत्ता में उनकी समान भूमिका के अभाव में आधुनिकता, समग्र विकास, सभ्यता एवं संस्कृति सब कुछ अर्थहीन है। राजनीति में महिला भागीदारी हेतु समाज के सभी वर्गों को सत्तत प्रयास करने होंगे एवं सभी को अपने–अपने उत्तरदायित्व का समान निर्वहन करना होगा, तभी महिला शक्ति का राष्ट्र निर्माण में अपेक्षित सहयोग प्राप्त हो सकेगा।

### *संदर्भ ग्रंथ सूची*

1. हरियाणा ग्रामीण विकास संस्थान, महिला सशक्तीकरण'' लड़कियां इंकलाब जिंदाबाद, सम्पादनः विकास नरायण राय, संस्करण 2008, दिल्ली, पेज 63
2. संगिनी, दैनिक जागरण, 6 मार्च, 2010
3. सरोज कुमार वर्मा, ''सशक्तिकरण के भारतीय संदर्भ'', योजना अक्तूबर 2008, नई दिल्ली, पेज 24
4. दैनिक जागरण, 9 दिसम्बर, 2009
5. किरण बेदी, ''महिला सशक्तिकरणः कुछ विचार'', योजना, अक्तूबर 2008, नई दिल्ली, पेज 16
6. दैनिक जागरण, 8 मार्च 2008.

# Publish Research Article
# International Level Multidisciplinary Research Journal
# For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

## Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net